स्कूल का परिचय

UDISE CODE – 20160819505

E-mail

KgbvGumla123@gmail.com

केजीबीवी गुमला की स्थापना जनवरी 2007 को बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु अभिवंचित वर्ग एवम छिजित वर्ग की छात्राओं के लिए खोला गया । यह विद्यालय पूर्णत आवासीय है एवम सिर्फ बालिकाओं के लिए है

2023 में विद्यालय को उत्कृष्ट विद्यालय की श्रेणी में रखा गया।

विद्यालय को CBSE से मान्यता प्राप्त है।विद्यालय में वो सभी सुविधाएं हैं जो एक प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूलों में होता है। विद्यालय में 421 छात्राएं अध्ययन रत हैं और 11 शिक्षिकाएं और हर्ष जोहर को लेकर हमारे स्कूल आरती कुमारी आती जो शिक्षक के साथ साथ अभिभवक , छात्रो समाजिक भवनात्मक शिक्षा के 9 कौशल परिशिक्षण देती है.

जैसे सामाजिक भावनात्मक शिक्षण के 9 कौशल

❖ पिंकी कुमारी की कहानी

➢ **परिचय** मेरा नाम पिंकी कुमारी है। मैं बारहवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मेरे पिता का नाम स्व. सोमरा उराँव और माता का नाम स्क ईन्दो देवी है। मेरा गाँव मड़वा, पोस्ट - ऑजन. थाना + जिला गुमला है। मेरा जन्म 2 अक्टूबर 2004 को ग्राम मड़वा में हुआ था । मेरे

परिवार में त 5 सदस्य थे जब मैं दो कि थी तब मेरी का माँ मृत्यु हो गई। उस समय मैं बहुत छोटी थी। मेरा देखभाल मेरे पिता और बड़ी दीदी करती थी। कुछ वर्ष ऐसे ही बीत गये और फिर उसके बाद पिताजी भी बीमार रहने लगे इलाज कराने के बावजुद भी उनकी मृत्यु 26 जुलाई 2012 को हो गया । जब मैं मात्र 8 वर्ष की थी। तब हम तीनों भाई-बहन अकेले हो गय हमारा देखरेख करने वाला कोई नहीं था। हमें खाने-पीने की बहुत दिक्कत होने लगी। हमें पढ़ाई लिखाई करने में बहुत कठिनाइयाँ हो रही थी। इसलिए मेरी दीदी और मैं हिमाचल चले गए। और वहाँ मजदूरी का काम करते थे। और मेरे भैया गाँव में रहकर अपनी पढ़ाई करते थे। और मेरा भी नामांकन हिमाचल के सरकारी विद्यालय लक्ष्मी देवी जैन स्कूल में करा दी। मेरे भैया मैट्रिक की परीक्षा पास करके वो भी हिमाचल चले गए। वहाँ पर वे मजदूरी का काम करने लगे। कुछ सालों तक हमलोगों का जीवन ऐसे ही चलता

- रहा। फिर मेरी दीदी ने अपने पसंद के लड़के से शादी कर ली। फिर भी हमलोगों को दीदी अपने साथ रखती थी। हिमाचल के सोलन जिले में रहते थे । कुल सालो बाद मेरी दीदी के दो बच्चे हुए। फिर कुछ महीनों बाद अचानक तबियत खराब होने लगा। और डॉक्टरो ने बताया कि उसे प्रेन इनफेक्सन हो गया है। इस बीच कई बार डॉक्टरों से ब्लाज करते रहे। लेकिन उनकी तनियत अधिक खरान होने लगी। और इसी बीच 24 अक्टूबर 2018 को उनकी मृत्यु हो गई। कुछ दिनों बाद मैं और मेरे भैया गाँव आ गए। मुझे पढ़ाने के लिए मेरे भैया के पास पैसा नहीं था। इसलिए मेरा नामांक जतरा टाना भगत हाई स्कूल गुमला में करा दिया। और अपने मामा की बेटी के घर रहकर में पढ़ाई करती था। और मेरे भैया हिमाचल चले गए और मेरी पढाई का खर्चा देते थे। कोरोना काल में वहाँ काम कर रहे थे। तो अचानक काम करते समय पहाड़ से मलवा और पत्थर उनके ऊपर गिर गया और उनकी दन कर मृत्यु 25 दिसम्बर 2020 को हो गई। फिर उनके बाव को हिमाचल से गाँव

लाया गया और उनका अंतिम संस्कार किया गया । उनके बाद मैं बिना व्यहारे और अकेली हो गई। मुझे उस समय बहुत अकेलापन लगता था। जब मैंने 2022 में मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। फिर उनके बाद मुझे आगे की पढाई करने के लिए मेरे पास पैसे नहीं थे। किसी ने मुझे बताया कि कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालय है। जिसमें अनाथ बच्चों का नामांकन होता है। वहाँ रहने खाने पीने सभी स्कूली सुविधाएं निशुल्क मिलती है। उस समय मुझे पता चला तो मैंने उपायुक्त

- से मिलकर निवेदन किया कि मैं अनाथ बच्ची हूँ। और मेरा कोई सहारा नहीं है। मुझे आगे की पढ़ाई करने के लिए कस्तुरता आवासीय विद्यालय में पढ़ना चाहती हूँ। उपायुक्त के द्वारा मेरा नामांकन कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय गुमला में हुआ । मेरा नामांकन कक्षा 11th में हुआ था। अभी मैं कस्तुरता गाँधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत हूँ। मैं अभी कक्षा बारहवीं में हूँ। कुछ दिनों बाद इंटर की परीक्षा मेरी पूरी हो जाएगी। मैं यहाँ से चली जाऊँगी और आगे की पढ़ाई व रहने का कोई साधन नहीं है। और मैं आगे

की पढ़ाई कराना चाहती हूँ। इसलिए मेरा यह अनुरोध है कि मुझे आगे की पढ़ाई करने के लिए प्रशासन मुझे सहयोग दे। तभी मैं अपने आगे की पढ़ाई पूरी कर सकूँगी ताकि जीवन अच्छे से व्यतीत कर सकूँ ।मेरा नाम पिंकी कुमारी है। मैं बारहवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मेरे पिता का नाम स्व. सोमरा उराँव और माता का नाम स्क ईन्दो देवी है। मेरा गाँव मड़वा, पोस्ट - ऑजन. थाना + जिला गुमला है। मेरा जन्म 2 अक्टूबर 2004 को मड़वा हुआ । मेरे परिवार में वर्ष की थी। तब 5 सदस्य मेरी माँ का गाँव में थे। जब मैं दो किसी कारण से मृत्यु हो गई। उस समय मैं बहुत छोटी थी। मेरा देखभाल मेरे पिता और बड़ी दीदी करती थी। कुछ वर्ष ऐसे ही बीत गये और फिर उसके बाद पिताजी भी बीमार रहने लगे इलाज करने के बावजुद उनका निर्धन 26 जुलाई 2012 को हो गया । जब मैं मात्र 8 वर्ष की थी। तब हम तीनों भाई-बहन अकेले हो गय हमारा देखरेख करने वाला कोई नहीं था। हमें खाने-पीने की बहुत दिक्कत होने लगी। हमें पढ़ाई लिखाई करने में बहुत कठिनाइयाँ हो रही थी।

इसलिए मेरी दीदी और मैं हिमाचल चले गए। और वहाँ मजदूरी का काम करते थे। और मेरे भैया गाँव में रहकर अपनी पढ़ाई करते थे। और मेरा भी नामांकन हिमाचल के सरकारी विद्यालय लक्ष्मी देवी जैन स्कूल में करा दी। मेरे भैया मैट्रिक की परीक्षा पास करके वो न्भी हिमाचल चले गए। वहाँ पर वे मजदूरी का काम करने लगे। कुछ सालों तक हमलोगों का जीवन ऐसे ही चलता

- रहा। फिर मेरी दीदी ने अपने पसंद के लड़के से शादी कर ली। फिर भी हमलोगों को दीदी अपने साथ रखती थी। हिमाचल के सोलन जिले में रहते थे । कुल सालो बाद मेरी दीदी के दो बच्चे हुए। फिर कुछ महीनों बाद अचानक तबियत खराब होने लगा। और डॉक्टरो ने बताया कि उसे प्रेन इनफेक्सन हो गया है। इस बीच कई बार डॉक्टरों से ब्लाज करते रहे। लेकिन उनकी तनियत अधिक खरान होने लगी। और इसी बीच 24 अक्टूबर 2018 को उनकी मृत्यु हो गई। कुछ दिनों बाद मैं और मेरे भैया गाँव आ गए। मुझे पढ़ाने के लिए मेरे भैया के पास पैसा नहीं था।

इसलिए मेरा नामांक जतरा टाना भगत हाई स्कूल गुमला में करा दिया। और अपने मामा की बेटी के घर रहकर में पढ़ाई करती था। और मेरे भैया हिमाचल चले गए और मेरी पढाई का खर्चा देते थे। कोरोना काल में वहाँ काम कर रहे थे। तो अचानक काम करते समय पहाड़ से मलवा और पत्थर उनके ऊपर गिर गया और उनकी दन कर मृत्यु 25 दिसम्बर 2020 को हो गई। फिर उनके बाव को हिमाचल से गाँव लाया गया और उनका अंतिम संस्कार किया गया । उनके बाद मैं बिना व्यहारे और अकेली हो गई। मुझे उस समय बहुत अकेलापन लगता था। जब मैंने 2022 में मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। फिर उनके बाद मुझे आगे की पढाई करने के लिए मेरे पास पैसे नहीं थे। किसी ने मुझे बताया कि कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालय है। जिसमें अनाथ बच्चों का नामांकन होता है। वहाँ रहने खाने पीने सभी स्कूली सुविधाएं निशुल्क मिलती है। उस समय मुझे पता चला तो मैंने उपायुक्त

- से मिलकर निवेदन किया कि मैं अनाथ बच्ची हूँ। और मेरा कोई सहारा नहीं है। मुझे आगे की पढ़ाई करने के लिए कस्तुरता आवासीय विद्यालय में पढ़ना चाहती हूँ। उपायुक्त के द्वारा मेरा नामांकन कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय गुमला में हुआ । मेरा नामांकन कक्षा 11th में हुआ था। अभी मैं कस्तुरता गाँधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत हूँ। मैं अभी कक्षा बारहवीं में हूँ। कुछ दिनों बाद इंटर की परीक्षा मेरी पूरी हो जाएगी। मैं यहाँ से चली जाऊँगी और आगे की पढ़ाई व रहने का कोई साधन नहीं है। और मैं आगे की पढ़ाई कराना चाहती हूँ। इसलिए मेरा यह अनुरोध है कि मुझे आगे की पढ़ाई करने के लिए प्रशासन मुझे सहयोग दे। तभी मैं अपने आगे की पढ़ाई पूरी कर सकूँगी ताकि जीवन अच्छे से व्यतीत कर सकूँ ।